Volume-4, Issue-8, August-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper

Hindi

साहित्यिक मनोविज्ञान और मनोवृतियां
Sahityik Manovigyan or Manovrutiya

Neetu Singh

Research, Hindi Department, Baba Mastnath University (B.M.U.), Rohtak (Haryana)-124001

ABSTRACT

उपन्यास शब्द को मनोविज्ञानिक तरीके से परिभाषित करने की कोशिश की है। उप–समीपऔर न्यास–याती के योग से बना है जिसका अर्थ हुआ मनुष्य के निकट रखी हुई वस्तु अर्थात अगर मैं इसे अपने शब्दों में कहना चाहुं तो मनुष्य के आसपास की चीजें, जिसे साहित्यकार/लेखक के द्वारा अपने मन की बात कहना चाहता है। इसमें यहां मन को प्रधान मानकर किसी वस्तु का उल्लेख करना मनोविज्ञान के अंतर्गत ही आता है। अतः किसी साहित्य को सही और उचित ढंग से समझने का रास्ता मनोविज्ञान से ही होकर गुजरता है।

KEYWORDS : उपन्यास साहित्य, मनोविज्ञान, मानव मस्तिष्क, इच्छाशक्ति,मनोवृतियां,चेतन, अचेतन और अर्द्धचेतन

मनुष्य को अपनी इच्छाशक्ति को सुदृढ बनाने से पहले अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना आवश्यक हो जाता है। मानव अपने परिवेश में प्राप्त अभिष्ट पदार्थों तथा परिस्थितियों के मध्य से गुजरकर तथा परिपालकों द्वारा अनुमो. दित एवम् समाज द्वारा स्वीकृत मार्ग पर चलकर ही अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पुर्ति के लिए अनेक विधियों को सीखता है इन्हीं विधियों को सीखते–सीखते ही मानव मन और इच्छाओं का विकास हो सकता है। जिस प्रकार स्थुल भौतिक पदार्थों के रूप में परिवर्तन हो सकता है लेकिन नाश नहीं होता, इसी तरह मानव अपनी और मन में बदलाव ला सकते है लेकिन मार नहीं सकते। ये इच्छाएं भी मन की वृ. तियों के कारण ही जन्म लेती हैं। जब तक इन इच्छाओं की पुर्ति नहीं होती तब तक जिन्दा ही रहती है, उस जिन्दा इच्छा को अपूर्ण इच्छा कहते हैं। अपूर्ण इच्छा अनेक रूप में व्यक्त होती हैजैसे अचेतन प्रेरणा, द्वद्ध, क्रोध, स्थानन्तरण, मानसिक विकार तथा मानसिक विकास । अपूर्ण इच्छा ही मनुष्य के व्यवहार का आधार है और यही वे इच्छाएँ है जिसके कारण मनुष्य पूरा जीवन नाचता रहता है। यहाँ नाचने से अ. भप्राय अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए हमेंषा ही दौड़ धुप में लगा रहता है। मानव की प्रत्येक क्रिया मूल रूप में उसके मानस के सम्बद्ध है। अतः उसकी सृजनात्मक क्रिया को समझने के लिए उसके मानसिक ढाँचे और उसकी मानसिक क्रिया का अध्याय जरूरी है। इसी अध्यापन के फलस्वरूप एक विज्ञान का उदय हुआ उसे मनो. विज्ञान का नाम दिया गया। अर्थात् वह शास्त्र जो मन की क्रियाओं को समझ सके, और इनको अध्ययन करने वालों को मनोविज्ञानिक कहा जाता है।

eukfoKku & मन के विज्ञान को मनोविज्ञान की संज्ञा दी गई है। मनोविज्ञान अग्र. ंजी शब्द ''साइक्लॉजी'' (psychology) का हिन्दी प्रयार्यवाची है जोकि युनानी भाषा के दो शब्द साईको (psycho) और लोजोस (logos) से मिलकर बना है अगर हम इन दोनों शब्दों का अलग–अलग अर्थ देखें – साईको का अर्थ है Soul(आत्मा) और Logò(लोगोस) का अर्थ discource;विचारविमर्षद्ध इन दोनों शब्दों के जुड़ाव से साइक्लॉजी शब्द बना। जिसका अभिप्रार्य हुआ ''मनुष्य की आत्मा के बारे में विचार–विमर्ष।'' आज के समय में मनोविज्ञान को मन को विज्ञान मानें तो यह परिभ. ाषा अपर्याप्त प्रतीत होती है। '' इस सदी के पूर्व 400–500 वर्षों तक मानस शस्त्री 'साइकी' का मन (mind) के अर्थ में अनुवाद करते थे। और 'साइकालोजी' का अर्थ मस्तिष्क से मानते थे। लेकिन 20वीं शताब्दी में यह परिभाषा बदल गई। मनोविज्ञान के अर्न्तगत मन की विविध क्रियाओं तथा शक्तियों और मनुष्य के स्वभाव एवं कार्यों की मूल प्रवृतियों–प्रेरणाओं का अध्ययन किया जाता है। इसलिए आज इसे व्यवहार का विज्ञान कहते हैं। ''शष्धिमी शास्त्रज्ञों ने अपने–अपने विचार में मनोविज्ञान का अर्थ प्रकट किया है। प्लेटो ने इसे आत्मा से जोड़कर, ''आत्मा को विचारों की स्वतंत्र एवं अलग सता'' कहा है। अरिस्तातल ने कहा ''शरीर का पूर्ण संचालक मन हैं, ज्ञानेदि. ंयों के उददीपन द्वारा हदृय पर विचारों के चिन्ह अंकित किए जाते है, इसके कारण ही मन शरीर से सम्बधिंत है इसलिए मन का अध्ययन आवष्यक है वुल्डम वुडट ने चेतनाओं का विश्लेषण करने के लिए सर्वप्रथम मनोविज्ञानिक शाला खोली।'' उसने मनोविज्ञान का अर्थ सिद्ध करते हुए 'चेतना का विज्ञान' कहा है। चेतना का विज्ञान संवेदना, कल्पना और भावनाओं का अध्ययन करता है। चुंकि मनोविज्ञान का वेदों से लेकर आधुनिक भारतीय दर्शन तक संबंध है, इसीलिए मनोविज्ञान का अर्थ स्पष्ट करने से पहले हमं उपनिषदों और भारत के दार्षनिक विचारधाराओं पर दृष्टि डालनी चाहिए।

मनोविज्ञान आज का आधुनिक शब्द है, अगर हम इसके अर्थ को समझकर इस पर ध्यान दे तो यह षब्द की उत्पीत का पता लगाना असम्भव प्रतीत होता है। अर्थात् अस शब्द का सीधा–सीधा मन, और आत्मा से सम्बंध है और ये दोनों तो शब्दों का ही मनुष्य रूप में जाल बिछा है जिससे विष्व का निर्माण हुआ। विष्व निर्माण के समय यह शब्द नया था, जिसकी किसी के द्वारा अर्थ नहीं दिया गया और ना ही ये शास्त्र किसी के जहन में आया। पुराने समय में मन की समस्त क्रियाओं को मनुष्य की इच्छा ही समझते थे। जैसे–जैसे समय आगे बढता गया हमारे पूर्वजों ने इस पर विचार किया, वे इसे मानस षास्त्र को 'जीवन का तत्वज्ञान' कहते थे। इस तत्वज्ञान में मन से संबंधी अर्थात् चेतन – मन और अतिचेतन मन का अध्ययन किया है। शंक. राचार्य, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द आदि महर्षियों ने 'आत्मा', 'परब्रह्म' आदि सम्बन्ध मन मानी आत्मा से लगाया है। इसलिए प्राचीनकाल में मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र कहा है।

miU;kl vkj eukfoKku & व्यक्ति अपने जीवन में बहुत कम आदर्शों का पालन करता है, जब व्यक्ति दोहरी जिन्दगी जीते है अर्थात् जो दिखते कुछ है और मन में कुछ ओर है, इसलिए वो बात जो मन में है समाज के सामने खुले आम कहकर जाहिर नहीं की जा सकती उसे वह कहानी, उपन्यास और नाटकों द्वारा प्रकट कर देता है। या युं कहे कि अपनी व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में फट रही समाज के प्रति उसकी सोच को किताबी रूप देकर अपनी मानसिक और शारीरिक स्थिति का सन्तुलन बनाए रखता है जो कि समष्टि मनोविज्ञान के अंतगर्त आता है। अतः उप. न्यास साहित्य में क्रांति लाने का श्रेय मनोविज्ञान को जाता है। मनोवैज्ञानिक खोजों से लेखकों का भी साहस बढा है और पाठकों का भी। जिन बातों को लिखने में डर लगता था और पढने में संकोच होता था, वे बातें अब खुलेआम लिखी जाने लगीं। व्यक्ति यदि अच्छा है तो उसे भीतर से भी अच्छा होना पड़ेगा अन्यथा मनोविज्ञान की कृपा से पाखण्ड का इस संसार में कोई साथ नहीं।

''साहित्य का वर्तमान युग मनोविज्ञान का युग कहा जाता है'' वर्तमान साहित्य अब केवल प्रेम का राम नहीं आता, उसके बाह्म सौन्दर्य को ही नही आंकता, बल्कि जीवन में उलझी हुई समस्यओं (समाजिक, राजनैतिक, सांसारिक मानसिक) पर भी विचार करता है और उसे सुलझाने की चेष्टा मनोवैज्ञानिक ढंग से करता है। साहित्यकार बाहरी वस्तुओं पर आकर्षित न होकर मानवजीवन के मनोजगत् के सूक्ष्मजीवन के उह. ापोह को, चेतन, अचेतन, अर्धचेतन मन को पहचानने की कोशिश करने लगा है।इसी विज्ञान के बल पर लेखक के मन में छिपे भाव का मिलता–जुलता स्वरूप का आभास कर सकते है। साहित्यकार जे0 डबलु0 बीच के अनुसार–'' पात्र के अंतर्मन का ज्ञान कहानी में वर्णित कार्य द्वारा प्राप्त हो और कार्यों का निर्माण पात्र के अंतर्मन में हो''।

ekuo efLr"d –मानव मस्तिष्क अन्य सभी जानवरों से भिन्न होता है इसी सि. न्ता के कारण मनुष्य को दूसरे प्राणियों से अलग रखकर उस पर मनोवैज्ञानिक प्रयोग करते है। उसी मनोवैज्ञानिक प्रयोग के द्वारा और कुछ चिकित्सा प्रणाली द्व ारा आज हम मानव मस्तिष्क को समझ पाए है। ''मानव मस्तिष्क उसकी सपाइनल कोड(Spinal Cod) से 55 गुणा वजनी होता है। एक मानव का मस्तिष्क दूसरे मानव से भिन्न होता है। प्रथम अन्तर आकार का होता है। 800 ग्राम से कम वजन का मस्तिष्क कमजोर होता है मनुष्य का मन विकसित होने में तिन विशेश बांते महतव रखर्ति है प्रथम बचा पेदा होने के समय उसका मस्तिष्क, दूसरी– बचपन और किशोरावस्था में मस्तिष्क का विकास (इसी समय में मस्तिष्क, की नई कोशिक. ाऐं बनती है और मौजुद कोशिकाओं के आकार में वृद्धि होती है) तीसरी– व्यक्ति को सीखने, समझने और निरीक्षण करने का कितना अवसर मिलता है। इन तीनों बातों से यह पता चलता है कि मनुष्य का मन और बौद्धिक विकास हुआ भी है या नहीं। जिससे उसे सोचने समझने, तर्क–वितर्क करने की क्षमता बौद्ध होता है। वह भिन्न –2 परिस्थितियों में क्या सोचता है और क्या करता है सभी विकल्प उसके अपने मन की ही उपज होती है। अतः बचपन से लेकर वृद्ध अवस्था तक मस्तिष्क का व्यक्ति के मन की कियाकलापों का सीधा संबंध स्थापित होता है।

eu vkjeukofr – मानव स्वतन्त्र नही है उसका जीवन अपने युग की अवस्था तथा परिस्थितियों द्वारा नियन्त्रित है ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी मन को लेकर काफी वाद–विवाद हुआ है। तत्व –सीमांसा में यह सिद्धांत है कि मानवीय संकल्प शक्ति स्वतन्त्र नहीं है। वह जैव नियमों सामाजिक पर्यावरण या ऐतिहासिक–राजनैतिक आर्थिक शक्तियों पर निर्भर है। चुकिं मनुष्य को भले–बुरे को समझने का विरोध का विवके होता है। अतः तत्व सीमांसा में लिखित तथ्य का विरोध करने का कुछ अंश प्रतिपादित होता है। भले–बरे के ज्ञान मात्र से ही मनुष्य अपनी तर्कशक्ति, संकल्प शक्ति को अपने मन और विवेक दोनों से वश में कर सकता है। व्यक्ति अपने तर्क. वितर्क, विवके के बल पर वही कार्य करने की कोशिश करता है जिससे उसका और उससे संबंध रखने वाले सभी का कल्याण हो सके। परन्तु कई बार ऐसा कार्य भी हो जाता है जिसे नहीं करना चाहिए। अतः ये सब मन में उत्पन्न हुई परिस्थितियों के कारण ही सम्भव हो सका है। इन सब परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मन को फ्रायड ने तीन भागों में तीन भागों में बॉटा है जिसे pru] vpru vkj v)pru का नाम दिया गया। वो काम जिनके बारे में हमें ज्ञान होता है वो चेतन के अंतर्गत आते है। अचेतन मन व्यक्ति के मन का वह भाग होता है जिसके बारे में व्यक्ति को स्वयं ज्ञान नहीं होता। जो ज्ञान और अज्ञान के बीच में ही फंसे रह जाती है वो अद्ध चेतन के अंतर्गत आते है और वे पूर्ण मानसिक सत्ता में चेतन और अचेतन दोनों

शामिल हैं।

अगर मनोवृति दो शब्दों के मेल से बना है मन+वृति, यहाँ मन का अर्थ चित्र, इच्छा, अंतःकरण और वृति का अर्थ प्रवाह आचार–व्यवहार से है। जब मन और वृति दोनों के अर्थो को मिलते है तो चित्र(मन) की आचार–व्यवहार करने के द्वारा रचित हिन्दी शब्दकोश में मनोवृति को मन के विकास की संज्ञा दी है। यहाँ विकास शब्द का अर्थ भावना, वासना, परिवर्तन (विचारों में होने वाले) से लिया गया है। अर्थात् मन में उत्पन्न होने वाली भावना, काम–वासना और विचाारों में होने वाले परिवर्तन को मनोवृति कहते हैं।

व्यक्ति के मन में अनेक तरह की वृतियां बनती है जिसका संबंध व्यक्ति के हित और अहित दोनों ये होता। मनोवृतियों का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व से होता है।'चरित्र' व्यक्तित्व का नैतिक और सदाचारी पक्ष है। व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार ही वह विशेषता है जो उसके काम करने के ढंग, काम में रूचि, अपने विचारों को प्रकट करने का ढंग आदि निहित होते हैं। और सामाजिक और नैतिक महत्व को चरित्र के लक्षण कहा जाता है। जो व्यक्ति अपने मन को बाहरी आकर्षण और बाधओं के बीच में भी सही रखकर कार्य करने में समर्थ होता है वह अधिक समय तक आनन्द की प्राप्ति करता है और चरित्रवान कहलाता है। चरित्रवान व्यक्ति में मानसिक द्वन्द और अहं की अधिकता होती है। दूसरी तरफ जो व्यक्ति आकर्षण में पड़ कर थोड़े समय का आनन्द प्राप्त करता है वह ना हो तो चरित्रवान होता और वो आनन्द ना ही उस व्यक्ति की हित में होता है। संक्षेप में कहे मनुष्य का चरित्र और व्यक्तित्व जैसा होगा वैसे ही उसकी मनोवृतियां। इन दोनों बातों से हम मनोवृतियों को दो भागों में बाँटना उचित समझते है। एक सकारात्मक मनोवृति जो व्यक्ति के हित में होकर उसका कल्याण करती है जैसे आशा, उदारता, संतुष्टि, आनन्द, आत्म कल्याण, द्वन्द आदि। दूसरी नकारात्मक मनोवृति जो व्यक्ति के अहित की तरफ जाकर उसका नाश करने की कोशिश करती है जैसे क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आदि।

REFERENCES

1. डा0 धनराज मानधाने – हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास । 2. डा0 गिरिधर प्रसाद शर्मा– हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन । 3. Ibib – Mind is a function of the body itself, page -2। 4. ललजीराम शुक्ल–सामान्य मनोविज्ञान । 5. Kaffka – Principal of Gestalt Psychalogy । 6. डा0 विमल सहस्त्रबुद्धे – हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। 7. S.Freud – A General Inttoducaiotn of Psychonalysis। 8मुन्शी और सिन्हा – रोगीगन। 9. J.W. Beah – The Twentieth Century Novel, Page – 120 "Soul should be defined by the action of the story an action should be determined by te soul of character".A